बात सीधी थी पर

यह कविता हमारे पाठ्य पुस्तक आरोह भाग - २ से उद्धृत है। इसमें कथ्य के द्वंद्व को उकेरते हुए भाषा की सहजता की बात की गई है। हर बात के लिए कुछ खास शब्द नियत होते हैं, ठीक वैसे ही जैसे हर पेंच के लिए एक निश्चित खांचा होता है। अब तक जिन शब्दों को हम एक-दूसरे के पर्याय के रूप में जानते हैं, उन सबके भी अपने अर्थ होते हैं। अच्छी बात या अच्छी कविता का बनना सही बात का सही शब्द से जुड़ना होता है और जब ऐसा होता है तो किसी दबाव या अतिरिक्त मेहनत की जरूरत नहीं होती, वह सहूलियत के साथ हो जाता है। सही बात को सही शब्दों के माध्यम से कहने से ही रचना प्रभावशाली बनती है।

कवि का मानना है कि बात और भाषा स्वभाविक रूप से जुड़े होते हैं। किन्तु कभी-कभी भाषा के मोह में सीधी बात भी टेढ़ी हो जाती है। मनुष्य अपनी भाषा को टेढ़ी तब बना देता है जब वह आडंबरपूर्ण तथा चमत्कारपूर्ण शब्दों के माध्यम से कथ्य को प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। अंततः शब्दों के चक्कर में पड़कर वे कथ्य अपना अर्थ खो बैठते हैं। अतः अपनी बात सहज एवं व्यावहारिक भाषा में कहना चाहिए, ताकि आम लोग कथ्य को भली-भांति समझ सकें।

Scanned with CamScanner